रमज़ान की बहार | By Haaji Aslam Sabri

रमज़ान की बहार ज़माने में आ गई
दुनिया पे रेहमतो के ख़ज़ाने लुटा गई

किस रोज़ादार की ये दुआ काम आ गई
रेहमत खुदा की अबरे करम बन के छा गई

रोज़ो की भूख प्यास वो सागर पिला गई
ये जैसे आदमी को फरिश्ता बना गई

माहे सियाम में जो शबे क़द्र आ गई
मोमिन को मगफिरत की बशारत सुना गई

इस माहे दिल नवाज़ की दरियादिली ये थी
कितने ही डूबतो को किनारे लगा गई

इफ्तार की खुशी वो तरावीह की दिलकशी
दुनिया में रोज़ादार को जन्नत दिखा गई

क़ुरआन ये कह रहा है शब् ए कद्र के लिए
उम्मत नबी की गौहरे नायब पा गई

रमज़ान में वही ए खुदा का हुआ नुज़ूल
अब वो किताब बन के ज़माने पे छा गयी

रमज़ान में खजूरों से इफ्तार जब किया
मुझको मेरे नबी की अदा याद आ गई

रमज़ान की बन्दा नवाज़ी तो देखिये
बन्दे की राज़ राज़ ए मशीयत बता गई
रेहमत खुदा की अबरे करम बन के छा गई
रमज़ान की बहार ज़माने में आ गई
दुनिया पे रेहमतो के ख़ज़ाने लुटा गई

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%b0%e0%a4%ae%e0%a4%9c%e0%a4%bc%e0%a4%be%e0%a4%a8-%e0%a4%95%e0%a5%80-%e0%a4%ac%e0%a4%b9%e0%a4%be%e0%a4%b0-by-haaji-aslam-sabri/